

15

DPN 6297

Title : नवरात्र स्वने विधि NAVA RĀTRA SVANE VIDH,

Run. No. 6988

Cat. No. 25

Micro. No.

Subject विधि / Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. / New. / Maith. - New. / New. - Nep. / नेपालभाषा निर्देश र
New direction.

Size in cms. 19.5 x 7

Folios 16

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ Rajendra Shrestha

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu / ~~Orpimented~~

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

१. ॐ नमः श्री वासुदेवाय, नवरात्र स्वने विधि ॥ न्यासादि : गुरु नमस्कार आङ्गव अष्ट पत्र
वासाव पंरव राम पंरव पूजा याम ~~वासाव पंरव राम पंरव पूजा याम~~ ॥ (पंचक)

10

5

तेन्द्रे कायाव अपले मन्त्र ॥ ३० श्री श्री हां हृदय नमः श्री ~~विष्णु~~ सिन्धु सिन्धु

दिव्याय वीर्य ॥

विष्णुः -

शुक्ल उष्माः पूजा क्रम -

- ✓ पंच पूजा - नवग्रह विधि,
- ✓ खण्ड स्वने विधि
- ✓ आपन कुन्दमा विधि
- ✓ जालन कुन्दमा विधि - दशवि कुन्दमा विधि
- ✓ पादुया प्रहामाली पूजा
- ✓ द्वितीयायां मोहेश्वरी पूजा
- ✓ तृतीयायां वैष्णवी पूजा
- ✓ चतुर्थीयां वैष्णवी पूजा
- ✓ पञ्चमीयां वाल्मीकी पूजा
- ✓ षष्ठीयां ॥ ऐन्द्रावली पूजा

सप्तमीयां	कामुकी पूजा
अष्टमीयां	महानक्षत्री पूजा
नवमीयां	उग्रयन्त्री पूजा





१ॐ नमः श्री चण्डिकाय ॥ नमः नानुस्मृत विधि ॥ न्यासादि ॥ यन्मन्त्रान् न्यासादिर्वर्षे न्यासः
 र्यस्वयुजामाय ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं अस्माकं ॥ नमः नानुस्मृत ॥ ॐ ह्रीं क्लीं क्लीं ह्ययायनमः ॥
 स्नानतन ॥ धर्मं र्यस्वयुजा ॥ तच्छाकायावजयनयनमः ॥ ॐ ह्रीं क्लीं क्लीं ह्ययायनमः ॥ ॐ ह्रीं
 नमः स्वाहा ॥ ॐ निघायवा मरु ॥ ॐ कवचाय ॐ ॥ ॐ नमः न्यायवा मरु ॥ ॐ निघायवा
 ॐ ॐ ह्रीं क्लीं क्लीं ह्ययायनमः ॥ धनस्वभावनयनयावहान ॥ र्यस्वयुजाय

य ॥ लस्वविय ॥ श्रीसंवरुन ॥ धर्मभूतदात्र ॥ वलि न्यात धर्मनयावधनुलियाय ॥ जियाः
 ॐ लितन ॥ मरु ॐ ॐ ह्रीं क्लीं क्लीं ह्ययायनमः ॥ ॐ ह्रीं क्लीं क्लीं ह्ययायनमः ॥ ॐ ह्रीं क्लीं क्लीं ह्ययायनमः ॥
 ॥ स्वाकमहावलिनभूतक ॥ धूमयय ॥ जायस्वा ॥ तच्छाका ॥ प्रकानत्रक ॥ अस्वयुर्वगण ॥ वलिवि
 मर्जनयायनमः ॥ अलिवावर्धय ॥ धर्मभूतदात्र ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 र्यस्वयुजाय ॥ यन्मन्त्रान् न्यासादिर्वर्षे न्यासः ॥ धर्मभूतदात्र ॥ स्वाहा
 स्नानयाय ॥ कनस ॥ अग्निनिवाय ॥ स्वाहा ॥ कनस ॥ अग्निनिवाय ॥ स्वाहा ॥ कनस ॥ अग्निनिवाय

अश्वान, दिक् ४ कथयता का, यं च यता का, लोक खान कल ॥ धत धन दाव ॥ खलु खन
 ॥ खलु खन मरु, उं कीं डी ड प्र वृत्त यस्का यन मा दू कां ॥ धिन हान वा क, दूर न स्वी ति क
 भाना नी, स रु म क क र्यं क लि, य स न्ना उं रु ज र्यं द रि ॥ ड य च धि न मा सु त ॥ गा व द च द्य
 क मा नू ता, म रि श्र म ज ला धि य, ता व ७ वं गु त्रि लं का ल, च न स्का य स्ति न र व, स्ति
 नारु व म रु द वी, ध वा धा म नू जा भि ध ॥ गा व ७ दं ग मि य ऊ रं, ता व ७ वं स्ति न मा च न ॥
 धत धिन हान वि धि ॥ **धत धन दाव** ॥ व लि धा य न या न य गु लि या य ॥ अ द्रा दि ॥ सूर्या

र्घ ॥ अश्व गु म धु ला का न ॥ गु नू त म स्का न ॥ ऊ न या य, अ र्घ या उ यू जा, उ त गु द्वि, आ स यू जा
 ॥ मा न ति य ध त ॥ यं च व लि ॥ धी स व र्ता ॥ रि ध व, क न स, क रु धू जा ॥ सा म्भ द न द गु लि
 धू न क ॥ व वि वि य, ला क म रु व लि न धू न क ॥ धू य, दी य, जा य, का य ॥ **धत धन दाव** ॥
 धा ध क या य ॥ वा क न, श्र य, अ दू स का य, **धत धा य न कू द्रा वि धि** ॥ ॥
श्वा च न कू द्रा वि धि ॥ स्ना ना दि, नि ल क र्म धू न का व, वि भि र्ध वा च न, धू न का न, धू
 वं य दी य, जा य रु य, धू न का व, त र्थ न, व लि वि स र्ज न या य, **धत धन दाव** ॥ ख लु श्र दि

सुधागिष्ठीद्वी० ॥

१ यादयात्रकाशलीयुगा ॥ हं गंगनाथनम ॥ श्रीगुरुभक्तमुखाद्वाङ्मनाम्बकठभासिणीः
नखस्वप्नकयाननमूढनखदाहभासिणी हं गंगनाथायवीर्यकाशीसूनवन्दिता

[illegible]

१८ तीयायी ॥ कामालियूजा ॥ मयूनासनाययादूकानम ॥ आन ॥ मयूनासनाययादूकानम ॥
वसुवाकृतिभावन ॥ सर्वस्वकर्तृकया सर्वस्वकर्तृकानि कार्त्तकं मनः ॥ अरुययवी महि
खासुनमदनी ॥ प्रवृत्तामहायवी सर्वस्वकर्तृकयादयिनी ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
चणु मरुतेनवाययादूकानम ॥ आवाहनायि ॥ सुति ॥ मयूनासनाययादूकानम ॥
नमो ॥ कोमालीनूयसंखान ॥ नानायगीनमस्तुत ॥ अरुगं आदि ॥ ॥
१८ तीयायी ॥ वैष्णवीयूजा ॥ गनूनासनाययादूकानम ॥ आन ॥ गनूनासनाययादूकानम ॥

वसुवाकृतिभावन ॥ सर्वस्वकर्तृकया सर्वस्वकर्तृकानि कार्त्तकं मनः ॥ अरुययवी महि
खासुनमदनी ॥ प्रवृत्तामहायवी सर्वस्वकर्तृकयादयिनी ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
चणु मरुतेनवाययादूकानम ॥ आवाहनायि ॥ सुति ॥ मयूनासनाययादूकानम ॥
नमो ॥ कोमालीनूयसंखान ॥ नानायगीनमस्तुत ॥ अरुगं आदि ॥ ॥

१८ तीयायी ॥ वानाहीयूजा ॥ महिमासनायनम ॥ आन ॥ महिमासनायनम ॥
रुतिभावन ॥ सर्वस्वकर्तृकया सर्वस्वकर्तृकानि कार्त्तकं मनः ॥ अरुययवी महि
खासुनमदनी ॥ प्रवृत्तामहायवी सर्वस्वकर्तृकयादयिनी ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यानं वनयंतथा। सनः मूलं वैव वनमरुयमवन। तर्कनीचमहायवी वनाहव
यनागालो। उर्वश्वात्ममहायवी यनसेनायव ॐ नी ॥ ८८ ॥ यचभुयै वनाहीयवीः
उत्तरुहं प्रवायनम ॥ आवाहनायि ॥ सुति ॥ ग्रहितायमहाचक्र यश्चतवसूचन
। वनाहानूयिषानि वनायणी नमस्तुत ॥ अर्गमआयि ॥

अष्टायां ॥ त्रेत्यायणीयूगा ॥ गङ्गासनाययादूकां नम ॥ आन ॥ गङ्गायनिस्तुतायवी
मनावाहनिनाचना वज्रकिंघ्रयधुध स्वर्गककामर्क ॥ गयामङ्गलयाग ॥

अरुयवनयंतथा। नतर्कनिधनं च कनलावकलाचन। उर्वश्वात्ममहायवी सर्वः
सिद्धिययायनी। उर्वचधुवली ॐ त्रेत्यायणीयवी कयालिमहाहं नवायनन ॥ आवाहनं
टि यिसुति ॥ किलिदिनिमहावज्र सहयनयनागाल वरुयागरुलचडी नानायणी
नमस्तुत ॥ अर्गमआयि ॥ ४॥

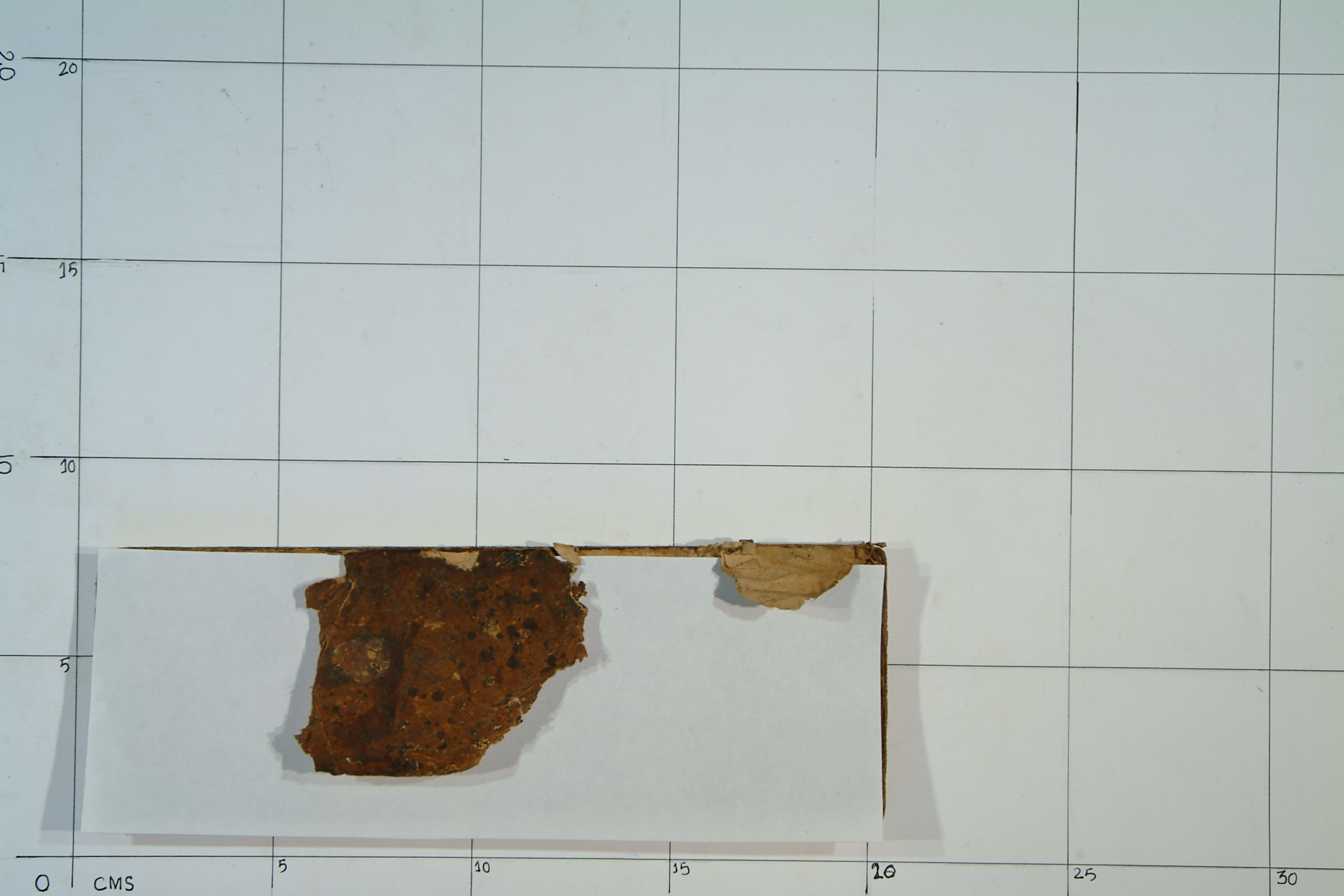
सक्यायां ॥ चामुधुयूगा ॥ यतासनाययादूकां नम ॥ आन ॥ यतासनसमाधुआय
श्चवकुणिनाचनी तिथिवाहमहाजीडी सर्वरनलसमिता धनखद्यामरुयं अक

मानावर्ततथा। रुतकामकच कुञ्ज गयार्जवभालिनी। सनकामकचन श्रयानया
 रययया। अकिर्त्यादिमहायवी सविर्गसुनसस्यलि। सर्वलाकवणीरुव उंउंउंउं
 याये। कामधुयै शीखनरुनवायनम॥ आवाहनादि॥ सुति॥ इष्टकनालवदन नि
 प्रमालाविह्वमित। कामधुमधुमथन नानायगीनमसुत॥ अगग आदि॥ ॥
 १ अकम्याय॥ महालक्ष्मीयुगा॥ सिंहासनाययादुकांतम॥ ध्यान॥ सिंहायलिस्त्रितायवी
 कानवाकृति भावनि। गूलैरुतटकतथाकुरुं। कामनमरुयकथा। कामकवययाकरिः

खरुखर्ततथा कृष्ण। मयमनुनागयागञ्ज यानयागद्वयंकथा विन्दुमयामहायवी महि
 स्वासुनमर्दनी। मधुमालाभक्षो यानविह्वललाचनि। एवंश्रत्वामहायवी शीषितार्थय
 यायिनी॥ अं अचक्षुकायू महालक्ष्मीयवी सिंहासनायनवायनम॥ आवाहनादि॥ सुति
 ॥ लक्ष्मीलक्ष्ममहाविश्वध्वयस्त्रिस्त्रिध्वय। महानाजिमहाविश्व नानायगीनमसुत॥ अ
 गग आदि॥ ॥ ॥
 १ नवम्याय॥ उग्रवधायुगा॥ सिंहासनायनम॥ महिमासनायनम॥ सहासनायन

म॥ निरुक्ता सनाथनम॥ आन॥ तफचामीकवर्षुरा नानाललायसोरिता। दिश्वरुयनी
 धानां दिशालंका नसोरिता। किलिठि कृष्णलाने॥ कयूनमणिनायून। लल्लमाला विविण
 न। हाजमाला वलीविता। अस्माय सउडा काना यीन वक्ररु वृन्हा। सर्वलंका नसंयका
 तदिक्काटिसमंयरा। खउं सनतथा वकं वका कर्णधनाधुरा। वलयधुमनूरुका धूनः
 यासुग्वरिता॥ [यदि ननु कचायता। रुथगुलातथाधुरा। रुठकं धनूरुका च गदाघः
 क्षसोरिता यागक्षत ऊनिरुका खदामकलयागकं विन्दुमया तथा सिद्धि सिद्धा सना

न
 यालिखिता अथखित्वा गीर्णुनमहिचक्षुमहासर्न। तद्विद्यानिर्जतायेत्य महावलयनाः
 कम॥ रुयमकि विधूनन विधुतासालिना वृहा। एवं आत्मानहायत्री सर्वकामरुल य
 या। णायाभायसरुका च खदाम उमन्नविना। मूडचधुयचधुय चधुयचधुनायिनी च
 धुयचधुवतीवेव चधुनूयातिचधु का चावता रावृणा कृष्ण नीला गुकाचधुमिका यिता
 उयाधुलायया अलिधस्वरुलिखिता। मयलिवानसमायुक्ता मायाकमिरुमधुन॥
 उंकी नाजयय कुं उयचधुनियुमर्दनिर्दुर्ग सयालक २ र्वामिर्जस ४ मरुह नयायः





$$\frac{20}{20}$$

15

नारुजामि॥ ॥ १॥ नाखारुं १॥ यमामि न यलान वायिखा कलकूडनी त् ४ विद्यामीत भा नया
 थिलमाति सतु यथा देवत आनि जा गेय लय या विति नया जिव कया भा कृत ॥ १॥ मूना मूजुर्न
 गलि विविनया न काम वामा कर्ता ॥ ॥ १॥ नमः ॥ नवद वाच ॥ ॥ १॥ नयनं दव ॥
 कता मकूट मदिता चन्द्र का तियती का ॥ चन्द्रा र्द्ध कृत लामनं ॥ ॥ १॥ व कु विष्ण नाक सूर्य गह
 ना ममदिता विष्णु कय मि व धुर्ल ॥ ॥ १॥ नयनं विना कृत कया लमा नारु लनं स्वर्द्ध रुठ कभा
 नर्ग या ॥ १॥ कूर्ण धनं दव ॥ ॥ १॥ नरु कयि ना किर्न विना यम नूरु क ॥ ॥ १॥ घष्ठा रु क शि धलि न व

जय धु कता तायं यनम्भ यू धरु सार्क वन दारु यरु रुध ॥ १॥ स्व द्वा म्भाननं मूर्धन नविः
 विष्णु न नरु तत उ विना कृत सिंरु चर्म पलि भानी गज चर्म रु नीयर्क अरु यल उ जाय व
 नील घट्ट सतं कर्ण उर्द्ध व कु मरु भानं रुठि कारु विचि न यत् ॥ ॥ १॥ अयि र्क सच्च व कु ॥
 नीला लय लय रु य किर्न उ विना निया त् वाम ल्भे व विचि नु यात् या जिमी ऊ णु मय
 कं ऊ क मा दय र्म निरा चन्द्रा र्द्ध चन्द्र यति का ॥ ॥ १॥ य धि म सु विचि न यत् स्व द्वा रु न व न
 यं सर्व का न रु लय र्क आय र्क न य क मा मानं स्वि य सि धि री मा न वं आ न य र्क न म ॥

१ॐ नमः ४ श्री कृष्णाय ॥ नैऋतीं श्रीं श्रीं ४ ॥ अखण्डमण्डलाकारं यावत्तु नमः ॥
 तथैतद्वर्णितं नमः ॥ श्रीगुणयुक्तं यावत्तु नमः ॥ श्रीगुणयुक्तं यावत्तु नमः ॥ अयम्मा
 प्राय ३ ॥ १ कर्मात्मनः ३ ॥ २ किञ्चित् २ विज्ञेयं कर्मात्मनः ३ ॥ ३ अयम्मा
 रूढं ४ ॥ ४ अयम्मा ३ ॥ ५ अयम्मा ३ ॥ ६ अयम्मा ३ ॥ ७ अयम्मा ३ ॥ ८ अयम्मा ३ ॥ ९ अयम्मा ३ ॥ १० अयम्मा ३ ॥ ११ अयम्मा ३ ॥ १२ अयम्मा ३ ॥ १३ अयम्मा ३ ॥ १४ अयम्मा ३ ॥ १५ अयम्मा ३ ॥ १६ अयम्मा ३ ॥ १७ अयम्मा ३ ॥ १८ अयम्मा ३ ॥ १९ अयम्मा ३ ॥ २० अयम्मा ३ ॥ २१ अयम्मा ३ ॥ २२ अयम्मा ३ ॥ २३ अयम्मा ३ ॥ २४ अयम्मा ३ ॥ २५ अयम्मा ३ ॥ २६ अयम्मा ३ ॥ २७ अयम्मा ३ ॥ २८ अयम्मा ३ ॥ २९ अयम्मा ३ ॥ ३० अयम्मा ३ ॥

१ॐ नमः ४ श्री कृष्णाय ॥ नैऋतीं श्रीं श्रीं ४ ॥ अखण्डमण्डलाकारं यावत्तु नमः ॥
 तथैतद्वर्णितं नमः ॥ श्रीगुणयुक्तं यावत्तु नमः ॥ श्रीगुणयुक्तं यावत्तु नमः ॥ अयम्मा
 प्राय ३ ॥ १ कर्मात्मनः ३ ॥ २ किञ्चित् २ विज्ञेयं कर्मात्मनः ३ ॥ ३ अयम्मा
 रूढं ४ ॥ ४ अयम्मा ३ ॥ ५ अयम्मा ३ ॥ ६ अयम्मा ३ ॥ ७ अयम्मा ३ ॥ ८ अयम्मा ३ ॥ ९ अयम्मा ३ ॥ १० अयम्मा ३ ॥ ११ अयम्मा ३ ॥ १२ अयम्मा ३ ॥ १३ अयम्मा ३ ॥ १४ अयम्मा ३ ॥ १५ अयम्मा ३ ॥ १६ अयम्मा ३ ॥ १७ अयम्मा ३ ॥ १८ अयम्मा ३ ॥ १९ अयम्मा ३ ॥ २० अयम्मा ३ ॥ २१ अयम्मा ३ ॥ २२ अयम्मा ३ ॥ २३ अयम्मा ३ ॥ २४ अयम्मा ३ ॥ २५ अयम्मा ३ ॥ २६ अयम्मा ३ ॥ २७ अयम्मा ३ ॥ २८ अयम्मा ३ ॥ २९ अयम्मा ३ ॥ ३० अयम्मा ३ ॥

दूज्जरि गवतिष्ठुरयामाएकाचन्द्रमधुमासावत्सासाजविष्णुह
नगद्यसहिताहेनवीक्ष्यपात्रानानकानकनूपाविविधगुणयया
यागिनिस्त्विनमाभि॥



20

20

1

15

5

10

5

0 CMS

5

10

15

20

25

30



